// अर्हम् //

हे प्रभो! यह तेरापंथ

दक्षिण हावड़ा श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा

13, डॉ० पी० के० बनर्जी रोड, हावड़ा - 711 101

दूरभाष / फैक्स : 2638 0934

संतों की उपासना से होता है तत्त्वबोध और आत्मबोध

— साध्वी कनकश्री

साध्वीश्री कनकश्रीजी अपनी सहयोगिनी साध्वियों के साथ महासभा भवन से विहार कर लम्बे जुलूस के साथ दक्षिण हावड़ा तेरापंथ भवन पधारी। कोलकाता, उत्तर हावड़ा एवं दक्षिण हावड़ा के सैंकड़ों भाई बहन आपकी अगवानी में महासभा भवन पहुंच गये थे और जुलूस की भव्यता बढ़ा रहे थे। दक्षिण हावड़ा सभा भवन में पधारते ही साध्वी श्री कनकश्री जी व मधुलता जी ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए चार दिवसीय प्रवास को सफल सार्थक बनाने की प्रेरणा दी।

नौ बजे आध्यात्मिक प्रवचन के दौरान साध्वी श्री ने कहा— धार्मिक परंपराओं के तीन महत्त्वपूर्ण शब्द हैं— उपासक, उपास्य और उपासना। उपास्य की उपासना करने वाला उपासक होता है। अध्यात्म के संदर्भ में जो आत्मा के निकट रहता है, ज्ञानीगुरुओं की सन्निधि में बैठकर ज्ञान प्राप्त करता है और श्रेष्ठ जीवन जीने की प्रेरणा लेता है वह उपासक होता है। प्रश्न होता है उपासना किसकी करें? साध्वी श्री ने कहा— जिसका जो इष्ट है, आराध्य है वही उसका उपास्य है। व्यवहार जगत में उपास्य होते हैं साधु। पर मात्र वेष धारण से कोई साधु नहीं होता। साधु वह होता है जो साधना करता है। जो समभाव और संयम से जीता है। उत्तराध्ययन सूत्र के रहस्यों को उद्घाटित करते हुए उन्होंने कहा— महावीर की दृष्टि में - मुण्डित होने मात्र से कोई कोई श्रमण नहीं होता, ॐ का जाप करने मात्र से कोई ब्राह्मण नहीं होता। न ही अरण्यवास से कोई मुनि होता है न चीवर धारण करने मात्र से कोई तापस या तपस्वी होता है। इसी प्रसंग को आगे बढ़ाते हुए साध्वी श्री ने कहा— समता से श्रमण, ब्रह्मचर्य की साधना से ब्राह्मण होता है। ज्ञान के विकास से मुनि होता है और तपोयोग की आराधना करने वाला तपस्वी होता है। इसके साथ साध्वी श्री ने कहा— पूजा, उपासना और आराधना का लक्ष्य आत्मशुद्धि होना चाहिए। भौतिक सुख की आकांक्षा से धर्म या उपासना करना- चैतन्य विकास की बाधा है।

इस अवसर साध्वी वीणा कुमारी जी ने भी मनुष्यजीवन की सार्थकता के लिए धर्मशास्त्रों के श्रवण, श्रद्धा और संयम साधना की प्रेरणा दी।

सभा के अध्यक्ष जंवरीमल जी नाहटा ने तथा महिला मंडल की अध्यक्षा सुरजमाल श्यामसुखा ने स्वागत भाषण किया। श्रीमती पुष्पा कुंडलिया के नेतृत्व में बहनों ने भावपूर्ण गीत का संगान किया। संयोजन बजरंग डागा ने किया।